

साह समाई (१२३)

सलोनी शुभ घड़ी आई आ वाधाई आ वाधाई आ।
थियड़ी मैया मन भाई आ वाधाई आ वाधाई आ॥

जंहि मधुमास में वरितो रघुवर धरती अ ते अवतार
उन्ही अ पुनीत मास में प्रघटियो साई सुखदाई आ॥

बिन कारण कृपाल प्रभू आ कई दीननि ते दाया
सिंधुड़ी अ जे सौभाग्य लाइ पंहिजी सहिचरि पठाई आ॥

धन सुखदेवी मैया जंहि जे भाग जी सीमा नाहे
बाल रूप साई अ जंहिजी कुखिड़ी सफल बणाई आ॥

पुण्य सरूप पिता रोचल खे सुर नर मुनि साराहिनि
प्रेम मूरति पुटिड़े जंहिजी जग में कीरति वधाई आ॥

चंद्र वदनु चमकीलो लाल जो नर नारियूं हर्षाए
जिते किथे नभ धरणी अ ते जय धुनि छाई आ॥

मुखड़े कमल मुस्कान मनोहर कोमल आ किलकारी
सुन्दर चितवन सरस सुहावन साह समाई आ॥

श्री मैगसि चंद्र मनोहर बालकु आंगन जो उज्यारो
बाल विनोद सां मनड़ो मोहे माउ हुलसाई आ॥